

*Pfarrer Dr. h. c. Gottlob Spörri
zum Dank und zur Freude*

Inhaltsverzeichnis

| | |
|---|-----|
| I. Einleitung | 7 |
| II. Interpretation | 9 |
| III. Dichtkunst der Bewahrung | 55 |
| A. Stilmittel der Bewahrung | 55 |
| 1. Das Zwiegespräch | 55 |
| 2. Das Doppelwort | 57 |
| 3. Das Bild des Schweigens | 58 |
| 4. Der verkleidete Begriff | 60 |
| 5. Der Kristall | 64 |
| 6. Der Samen | 66 |
| 7. Der gedichtete Augenblick | 67 |
| 8. Pars pro toto | 69 |
| 9. Das dichterische Bild | 71 |
| 10. Der Mond | 74 |
| 11. Die Spärlichkeit | 77 |
| B. Alchemie der Sprache | 80 |
| 1. Verkörperung des Geistes | 84 |
| 2. Gestaltung - Ausgestaltung | 88 |
| 3. Verleiblichung der Seele | 95 |
| 4. Die Zersplitterung | 96 |
| 5. Die Wiederholung | 98 |
| 6. Die Beschränkung | 100 |
| IV. Schlußbetrachtung | 103 |